# 6. छुट्टी पत्र

**प्रश्न :**

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहे हैं?
1. पत्र क्यों लिखा जाता है?

**छात्रों के लिए सूचनाएँ :**

1. पाठ पढ़ो। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित करो।
2. कठिन शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा करो।
3. कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़ो।

अनंतपुर,

दिनांक : 13-08-2012,

सेवा में,

प्रधानाध्यापक जी,

सरकारी माध्यमिक पाठशाला,

अनंतपुर।

महोदय,

मेरी दीदी का विवाह हैदराबाद में होने वाला है। सब शादी में जा रहे हैं। मैं भी जाना चाहती हूँ। इस कारण मुझे दिनांक 14- 08-2012 से 16-08-2012 तक तीन दिन की छुट्टी देने की कृपा करें।

धन्यवाद।

आपकी आज्ञाकारी छात्रा,

मेधा,

क्रमांक : 17,

कक्षा : सातवीं

© SCERT not to be republished

## सुनो-बोलो

1. मेधा अपनी दीदी की शादी में क्यों जाना चाहती है?
2. शादी में क्या-क्या कार्यक्रम होते हैं? बताओ।

## पढ़ो

(अ) निम्न वाक्यों को पढ़कर क्रम में लगाओ।

- धन्यवाद।
- मैं भी जाना चाहती हूँ।
- मेरी दीदी का विवाह हैदराबाद में होने वाला है।
- इस कारण मुझे दिनांक 14-08-2012 से 16-08-2012 तक तीन दिन की छुट्टी देने की कृपा करें।

## लिखो

(अ) शब्दों को पत्र के आधार पर उचित स्थान पर लिखो।

दिनांक, सेवा में, स्थान, आपकी आज्ञाकारी, धन्यवाद, महोदय, विषय, पता

© SCERT not to be republished

## शब्द भंडार

(अ) पढ़ो, समझो और लिखो।

| | | |
|---|---|---|
| पूज्य | मित्र | पूज्य पिताजी |
| श्रीमान | पिताजी ..... | |
| प्रिय | अध्यापक | ..... |

(आ) सही संख्याएँ रिक्त स्थान में लिखो।

(12, 60, 7, 24)

- वर्ष में ..... महीने होते हैं।
- सप्ताह में ..... दिन होते हैं।
- दिन में ..... घंटे होते हैं।
- एक घंटे में ..... मिनट होते हैं।

(इ) परिवार के सदस्यों के नामों से रिक्त स्थान भरो।

जैसे :- माता-पिता का नाम

1. ..... - .....
2. ..... - .....
3. ..... - .....
4. ..... - .....

## सृजनात्मक अभिव्यक्ति

कोई कारण बताते हुए कक्षाध्यापक के नाम छुट्टी पत्र लिखो।

| क्या मैं ये कर सकता हूँ? | हाँ (√) | नहीं (×) |
|---|---|---|
| 1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता हूँ। | | |
| 2. पत्र रचना के बारे में अपने शब्दों में बता सकता हूँ। | | |
| 3. छुट्टी पत्र लिख सकता हूँ। | | |

हमें हर दिन कुछ नया सीखना चाहिए।

© SCERT not to be republished

पढ़ो-आनंद लो

# चूहे को मिली पेंसिल

एक चूहा था। उसे बहुत भूख लग रही थी। वह खाने के लिए कुछ ढूँढ रहा था। उसे एक पेंसिल मिली। चूहा पेंसिल लेकर अपने बिल में घुस गया।

पेंसिल चूहे से गिड़गिड़ाकर बोली- ''मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो। मैं तुम्हारे किस काम की हूँ? मैं तो लकड़ी का टुकड़ा हूँ। खाने में भी अच्छी नहीं लगूँगी।''

चूहे ने कहा- ''मैं तुम्हें कुतरूँगा'' । मुझे अपने दाँत पैने और छोटे रखने के लिए हमेशा कुछ न कुछ कुतरना पड़ता है।'' यह कहते-कहते चूहे ने पेंसिल कुतरना शुरू कर दिया।

''उई, मुझे दर्द हो रहा है'' पेंसिल ने कहा। ''मुझे एक आखिरी चित्र बना लेने दो, फिर तुम जो चाहे करना।'' ''ठीक है'', चूहे ने कहा, ''तुम चित्र बना लो। फिर मैं चबाकर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।''

पेंसिल ने ठंडी साँस ली। उसने एक बड़ा-सा गोला और उसके अंदर तीन छोटे गोले बना दिये। ''यह क्या पनीर का टुकड़ा है?'' चूहे ने पूछा। ''चलो, हम इसे पनीर बोलेंगे।'', पेंसिल ने मान लिया।

फिर उसने बड़े गोले के नीचे एक बड़ा गोला बनाया। ''अरे, यह तो सेब है।'', चूहा चहका। ''हाँ, इसे सेब कह लेते हैं,'' पेंसिल ने कहा।

© SCERT not to be republished

पेंसिल फिर दूसरे बड़े गोले के पास कुछ अजीब चित्र बनाने लगी। ''अरे वाह! अब तो मज़ा ही आ गया। ये तो ककड़ी है।'' चूहे के मुँह में पानी आने लगा। ''जल्दी करो। मुझे खाना है।''

पेंसिल ने ऊपर वाले गोले के ऊपर दो छोटे तिकोने बना दिये। ''अरे, अरे।'' चूहा चीखा। ''अब तो तुम उसे बिल्ली की तरह बनाने लगी। और आगे मत बनाओ।''

लेकिन पेंसिल बनाती गयी। उसने ऊपर के गोले पर लंबी-लंबी मूँछें और मुँह बनाया।

चूहा डरकर चिल्लाया। ''अरे बाप रे! यह तो बिल्कुल

असली बिल्ली लग रही है। बचाओ।''

ऐसा कहकर वह भागकर अपने बिल में घुस गया।

© SCERT not to be republished